अध्याय

10

विकास

सीखने के प्रतिफल

- इस अध्याय से विधार्थी विकासशील देशों में हुए विकास के बारे में सीखेंगे।

विकास की परिभाषा:-

- संकुचित रूप में इसका प्रयोग प्राय: आर्थिक विकास की दरों में वृद्धि और समाज का आधुनिकीकरण के संदर्भ में किया जाता है।
- व्यापक रूप में विकास का अर्थ उन्नति प्रगति कल्याण और बेहतर जीवन की अभिलाषा के विचारों का वाहक है।

विकास की चुनौतियां:-

- विकास की सबसे बड़ी चुनौतियां विकासशील देशों में था।
- विकासशील देश का अर्थ जहां की शिक्षा चिकित्सा एवं अन्य सुविधाएं कम हो। जहां की निवासियों का जीवन स्तर निम्नतर हो। जैसे- भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, ब्राजील आदि।
- बीसवीं सदी के उत्तरार्ध (1950-1960 के दशक) में जब अधिकतर एशियाई और अफ्रीकी देशों ने औपनिवेशिक शासन से आजादी हासिल हुई थी।
- तब उनकी स्थिति कंगाल और भुखमरी के कगार में थी उनके सामने महत्वपूर्ण काम गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी, निरक्षरता और बुनियादी सुविधाओं की समस्याओं का समाधान करना था।
- उन लोगों का मानना था कि पिछड़ेपन का मुख्य कारण औपनिवेशिक शासन था।
- आजादी मिलने के बाद इन देशों ने विकसित राष्ट्रों की देखा देखी अपने देशों में भी विकास परियोजना शुरू की। और ऐसा कर पाया विकसित देशों की मदद और कर्ज के जरिए।
- पचास की दशक में प्रारंभ करते हुए भारत में विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं की एक श्रृंखला बनी।
- और इनमें भाखड़ा-नांगल बांध देश की विभिन्न हिस्सों में इस्पात संयंत्रों की स्थापना, खनन, उर्वरक उत्पादन और कृषि तकनीकों में सुधार जैसी अनेक बृहद परियोजनाएं शामिल थी।

© JCERT not to be republished

- विज्ञान की ताजा तरीन खोजों को अपनाने और नवीनतम तकनीकों पर काफी विश्वास किया गया था भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे नए शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए। और उन्नत देशों के ज्ञान विज्ञान से जुड़ने को प्राथमिकता दिया गया।

विकास के मॉडल की आलोचनाएं:-

- विकास के आलोचकों ने ध्यान दिलाया है कि बहुत से देशों में जिस तरीके से विकास मॉडल को अपनाया गया है वह विकासशील देशों के लिए काफी महंगा साबित हुआ है।

- इसमें वित्तिय लागत बहुत अधिक हो गई और अनेक देश दीर्घकालीन कर्ज से दब गए।

- अफ्रीका अभी तक अमीर देशों से लिए गए भारी कर्ज तले उबर नहीं पाया है।

- विकास के रूप में जोउपलब्धि होना था,वह कर्ज के अनुरूप नहीं हुआ। और दरिद्रता एवं रोगों ने अभी भी महाद्वीप को अपनी चपेट में ले रखा है।

विकास कि वह कीमत जो समाज को चुकानी पड़ी:-

- विकास की इस मॉडल के कारण बहुत बड़ी सामाजिक कीमत भी चुकानी पड़ी अन्य चीजों के अलावा बड़े-बड़े बांधों के निर्माण औद्योगिक गतिविधियों और खनन कार्यों की वजह से बड़ी संख्या में लोगों का उनके घरों को क्षेत्रों से विस्थापन हुआ।

- विस्थापन का परिणाम आजीविका खोने और दरिद्रता में वृद्धि के रूप में सामने आया ।

- अगर ग्रामीण खेतिहर समुदाय अपने परंपरागत पैसे और क्षेत्र से विस्थापित होते हैं तो वे समाज के हाशिए पर चले जाते हैं

- बाद में वे शहरी और ग्रामीण गरीबों की विशाल आबादी में शामिल हो जाते हैं। लंबी अवधि में अर्जित परंपरागत कौशल नष्ट हो जाते हैं संस्कृति का भी विनाश होता है। और अपनी पूरी सामुदायिक जीवन पद्धति खो बैठते हैं।

विकास कि वह कीमत जो पर्यावरण को चुकानी पड़ी:-

- विकास की वजह से अनेक देशों में पर्यावरण को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचा है और इसके परिणामों को विस्थापित लोग ही नहीं पूरी आबादी महसूस करने लगी है

- इस विकास की वजह से सुनामी, ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण परिस्थितिकी संकट, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमिगत जल स्तर का कम होना आदि

विकास का मूल्यांकन:-

- यह नहीं कहा जा सकता कि दुनिया पर विकास का नकारात्मक प्रभाव ही पड़ा है। कुछ देशों ने अपने आर्थिक उन्नति की दर बढ़ाने एवं गरीबी हटाने में भी कुछ सफलता हासिल की है।

- आर्थिक उन्नति पर अत्यधिक ध्यान होने से अनेक प्रकार की समस्याएं ही नहीं बढ़ी है, आर्थिक उन्नति भी हमेशा संतोषजनक नहीं रही है इसलिए विकास को अब व्यापक अर्थ में ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जा रहा है जो सभी लोगों के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करें।

© JCERT not to be republished

- अब विकास को मापने के वैकल्पिक तरीके खोजे जा रहे हैं। जिसमें से एक (यू.एन.डी.पी.) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम है। (United nations development program)

- मानव विकास को मापने के लिए (यूएनडीपी) वार्षिक तौर पर प्रकाशित करता है

- इस प्रतिवेदन में साक्षरता, शैक्षिक स्तर, आयु प्रत्याशा, मातृ मृत्यु दर जैसे विभिन्न सामाजिक संकेतों के आधार पर देशों का दर्जा निर्धारित किया जाता है। इस उपाय को मानव विकास सूचकांक कहां जाता है

विकास की वैकल्पिक अवधारणा:-

- विकास नीतियों के कारण जो कीमत चुकानी पड़ी है उसका और विकास के फायदों का वितरण भी लोगों के बीच असमान रूप से हुआ है।

- अधिकतर देशों में विकास की ऊपर से नीचे की और रणनीति अपनाई गई है। अर्थात सभी फैसले आमतौर पर राजनीतिक नेतृत्व और नौकरशाही के उच्चतर स्तरों पर होते हैं।

- जिन लोगों के जीवन पर विकास योजनाओं का तत्काल असर पड़ता है, आमतौर पर उनसे तनिक भी सलाह नहीं ली जाती है।

- विकास के अधिकांश फायदे ताकतवर लोगों ने हथिया लिए हैं और विकास की कीमत गरीबों को चुकानी पड़ी है। जैसे- विस्थापन, बेरोजगारी, संस्कृतियों से दूर होना आदि

- एक सवाल यह उठाया गया है कि प्रभावित आबादी कुल मिलाकर किन संरक्षणों का दावा राज्य और समाज से कर सकती है?

- क्या लोकतंत्र में लोगों को यह अधिकार है कि उनके जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णय में उनसे सलाह ली जाए

लोकतांत्रिक सहभागिता एवं विकास और जीवन शैली:-

- लोकतांत्रिक सहभागिता के आधार पर विकास की रणनीतियों में स्थानीय निर्णयकारी संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।

- ऊपर से नीचे की रणनीति को त्यागते हुए विकास की प्राथमिकताओं, रणनितियों के चयन व परियोजनाओ के वास्तविक कार्यान्वयन में स्थानीय लोगों के अनुभवों को महत्व देना तथा उनके शान का उपयोग करने के लिए उनकी भागदारी को बढ़ावा।

- न्यायपूर्ण और सतत विकास की अवधारणा को महत्व देना।

- प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित व संरक्षित रखने के प्रयास किए जाने चाहिए।

- हमें अपनी जीवन शैली को बदलकर उन साधनों का कम से कम प्रयोग करना चाहिए जिनका नवीनीकरण नहीं हो सकता।

- विकास को देश में मोबाइल फोनों की संख्या अत्याधुनिक हथियारों या कारों के बढ़ते आकार से नहीं बल्कि लोगों के जीवन की गुणवत्ता से नापा जाना चाहिए, जो उनकी प्रसन्नता सुख शांति और बुनियादी जरूरतों के पूरा होने में झलकती है।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य:-

- विकास का विचार बेहतर जीवन की कामना से जुड़ा है। यह बहुत ही सशक्त कामना है और बेहतर जीवन की उम्मीद मानवीय कार्यों की संचालक शक्ति है।
- विकास के लक्ष्यों का अनुसरण करने के दौरान उठे मसले बताते हैं कि हमारे चयन का बाकी मनुष्यों और दुनिया के अन्य जीवो पर भी प्रभाव पड़ता है
- इसलिए हमें अपने को ब्रह्मांड का अंग ही समझना चाहिए क्योंकि हमारी नियति आपस में जुड़ी हुई है।साथ ही मेरा कार्य दूसरे पर ही नहीं भविष्य की मेरी संभावनाओं पर भी असर डालता है।
- इसलिए हमें सतर्कता से चुनाव करना चाहिए अपने वर्तमान जरूरतों का ही नहीं, दीर्घकालीन हितों का ध्यान भी रखना चाहिए।
- विकास की दृष्टि से विश्व को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है-विकसित देश,विकासशील देश, अल्प विकसित देश।
- वायुमण्डल में ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन की वजह से आर्कटिक और अंटार्कटिक ध्रुवों पर बर्फ पिघल रही है। परिणामस्वरूप बांग्लादेश एवं मालदीव जैसे निम्न भूमि वाले क्षेत्रों को डुबो देने में सक्षम हैं ।

© JCERT not to be republished

अभ्यास प्रश्न–

बहुविकल्पीय प्रश्नः–

1. विकास से क्या तात्पर्य है?

   a. उन्नति, प्रगति, कल्याण और बेहतर जीवन की अभिलाषा

   b. संपत्ति अर्जित करना

   c. काम करना और मजदूरी प्राप्त करना

   d. उपरोक्त सभी

2. विकास की वह कीमत जो समाज को चुकानी पड़ी है?

   a. बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हुए

   b. आजीविका के साधन खोने पड़े है

   c. उनके सांस्कृति को विनाश हुआ है

   d. उपरोक्त सभी

3. विकास का उद्देश्य क्या है ?

   a. अर्थव्यवस्था में आत्मनिर्भरता लाना

   b. रोजगार में वृद्धि करना

   c. व्यक्ति, समाज और देश का सर्वांगीन विकास करना

   d. उपरोक्त सभी

4. U.N.D.P. का फुल फॉर्म क्या होता है?

   a. United Nations development program

   b. Union north development program

   c union Nations door policy

   d. इनमें से कोई नहीं

5. भारत में पंचवर्षीय योजना की शुरुआत किस दशक में शुरू हुई?

   a. पचास के दशक में

   b. साठ के दशक में

   c. चालिस के दशक में

   d. अस्सी के दशक में

लघु उत्तरीय प्रश्नः–

6. विकास के परिभाषा को लिखें।

7. गरीबी शब्द से आप क्या समझते हैं?

8. विकास की मुख्य चुनौतियां क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न;–

9. विकसित और विकासशील देशों में अंतर स्पष्ट करें।

10. विकास के वैकल्पिक अवधारणाओं का वर्णन करें।

© JCERT not to be republished